

# एलिया औज़ि शारपत शैर री बिदुवा





# एलिया औज़ि शारपत शैर री बिदुवा

Bangani  
uttarkashi, uttrakhand, india



For permission to reuse, contact the copyright holder.

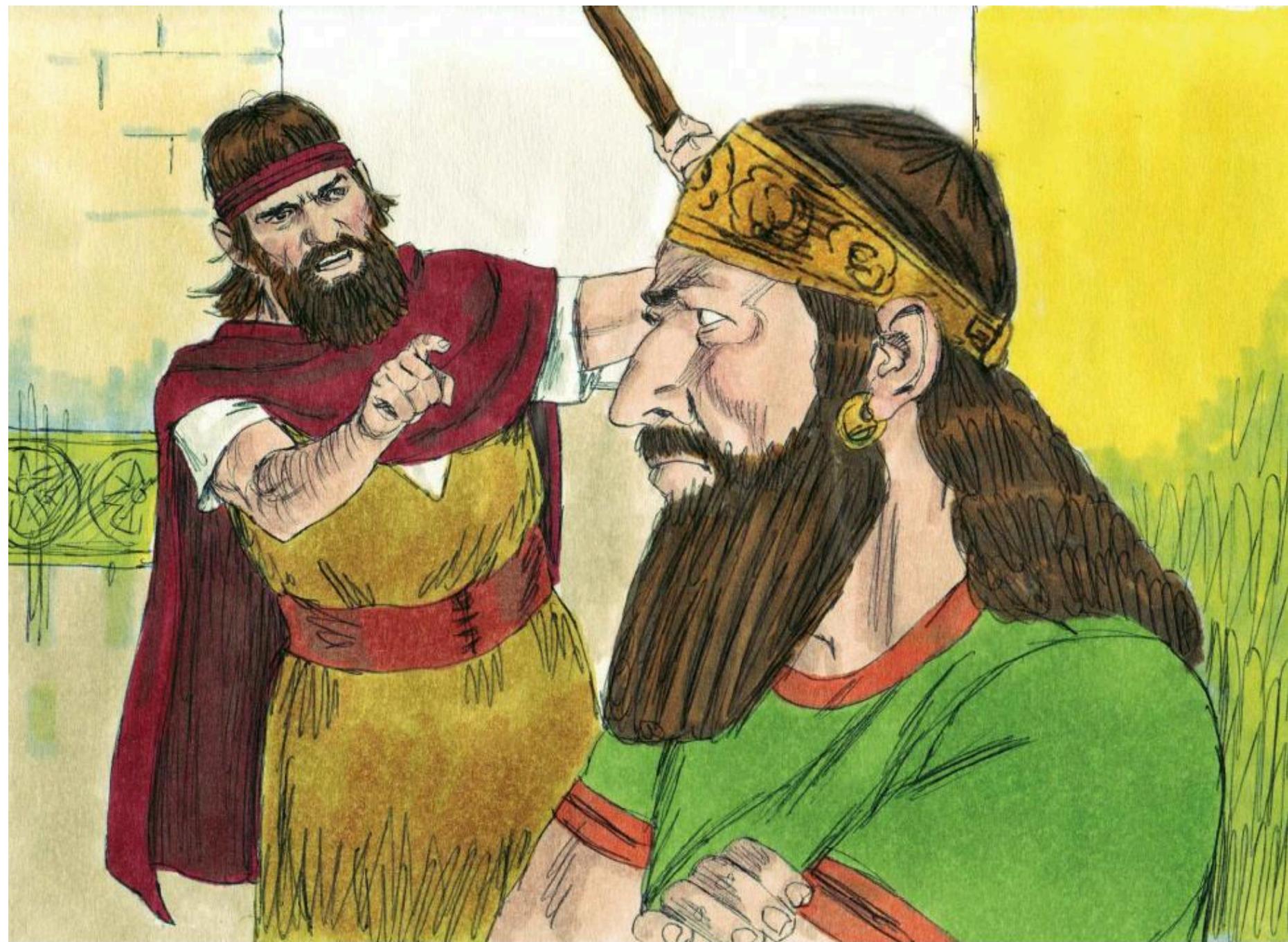
Big Book in Bangani language  
Orange Level Book

प्रकाशण:-

NLCI  
बंगाणी मसी समिति समू

## दो बात

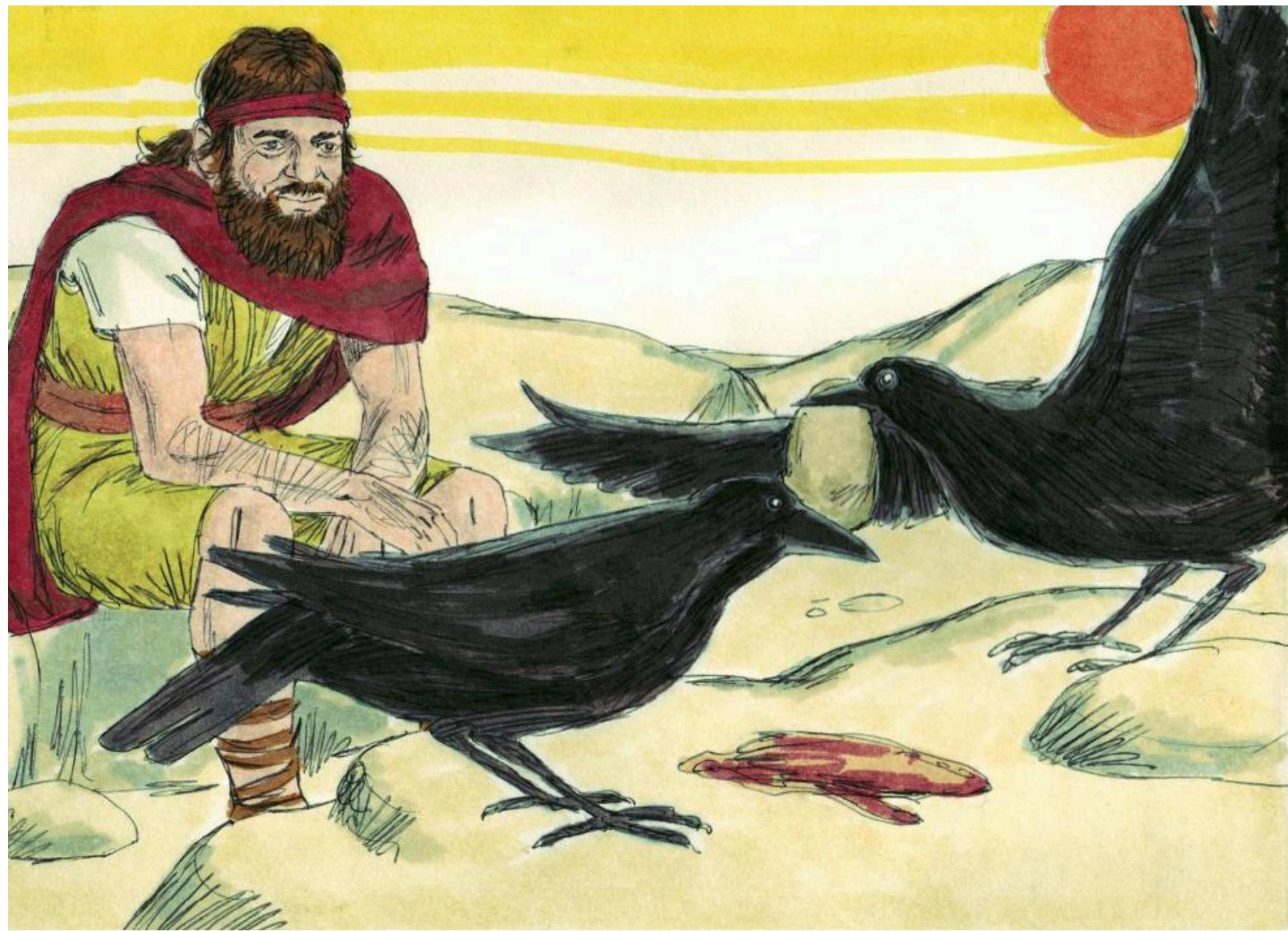
हम बंगाणी क्षेत्र में साक्षरता कार्यक्रम चला रहे हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ना लिखना सीख सकें। उसी आधार पर इस किताब को भी तैयार किया गया है। यह एक कहानी की किताब है। जिसमें एलिया और शारपत नगर की बिदुवा के बारे में बहुत ही सरल रीति से बताया गया है। इस कहानी को हमने अपनी मातृभाषा में ही तैयार किया है जिससे वह इस कहानी को आसानी से समझ सके। और अपनी मातृभाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास भी कर सकें।



जौ इस्लाएल रौ राजा औज़ि लोगु परमेश्वर री  
उपासना कौरणौ छोड़ौ, तै सै दुजै देवी देवताऊँ  
री पुज़ा कौरदै लागै, तैबै परमेश्वरेइ आपड़ौ दास  
एलिया, इस्लाएल दी अहाब काई छाड़ौ, औज़ि  
तिणी डेइयौ अहाब आरी बोलौ, कि आऊँ  
परमेश्वर री सेवा कौरु औज़ि आऊँ बाखी,  
आगली साल दी एस देश दी ना तै ओश पौड़ै लौ  
ना जौड़ लागै लौ।



ਜੜ੍ਹਾਡ੍ਹ ਤੈਬੇਇ ਲਾਗੈ ਲੈ, ਜ੍ਹੈ ਆਊੰ ਬੋਲੂ ਲੈ। ਏਥੈ  
ਬੋਲਿਧਾ ਏਲਿਧਾ ਤੇਤਕੌਇ ਪੋਲੁ ਬਾਗੈ, ਤੈਬੈ  
ਪਰਮੇਸ਼ਵਰੇਇ ਏਲਿਧਾ ਆਰੀ ਬੋਲਾਉ, ਤੂ ਏਝੀ ਜਾਗਾ  
ਛੋਡਿਧਾ ਕਰੀਤ ਖੜ੍ਹਟੇ ਦੀ ਚੌਰਿਅ। ਤੂ ਖੜ੍ਹਟੈ ਕੌਇ  
ਪਿਧੈ ਪਾਣੀ, ਆਜ਼ਿ ਸੂਈ ਕੁਵਾਟੂ ਕੈ ਆਦੇਸ਼ ਦੇਣੈ-ਨਦੈ,  
ਕਿ ਸੇਤ ਸੇਜੀ ਜਾਗਾ ਦੀ ਤਾਊੰਖੀ ਖਾਣਾਂ ਆਣੈ ਲੈ।



ਤੈਬੈ ਏਲਿਆ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਰੈ ਬੋਲਣੇ ਰੀ ਬੌਜ਼ੈ ਕੌਇ  
ਕਰੀਤ ਖੌਟੇ ਦੀ ਡੇਈਧੌ ਚੋਰੁਵਾਂ। ਆਜ਼ਿ ਰੋਜ਼  
ਰਾਤਿਕੈ ਆਜ਼ਿ ਬਿਧਾਇਕੈ ਤੇਸਖੀ ਕੁਵਾਟੂ ਆਣੈ ਥੈ  
ਖਾਣਾਂ। ਕੁਛੁ ਬੌਕਤੈ ਬਾਸਿਧੈ ਜ਼ੈਡ ਨਾ ਲਾਗਣੇਰੀ  
ਬੌਜ਼ੈ ਕੌਇ ਖੌਟੀਂ ਪੋਰੁ ਸ਼ੁਕੈ।



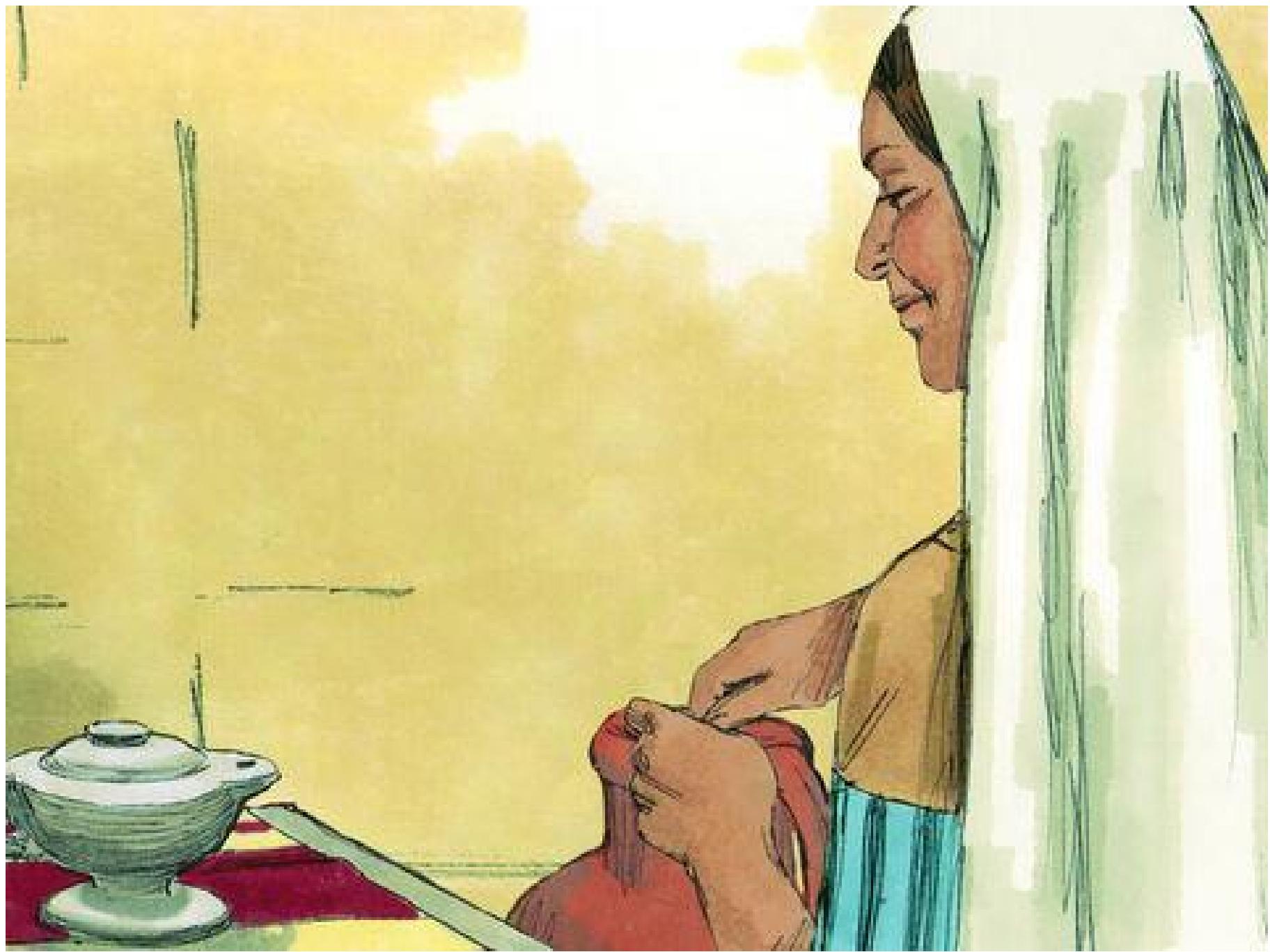
ਤੈਥੈ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰੇਇ ਏਲਿਧਾ ਆਰੀ ਬੋਲੌ, ਏਥੈ ਤ੍ਰ  
ਸਾਰਪਤ ਸ਼ੈਰ ਦੀ ਡੇਊ, ਸੁਝੰ ਤੇਤਕੈ ਏਕ ਬਿਦੁਵਾ  
ਛੇਊਡੀ ਕਾਈ ਤਾਊਂਖੀ ਖਾਣੈ ਰਾਈ ਇੰਤਜ਼ਾਮ ਕਿਧੌਨਦੈ ।  
ਤੈਥੈ ਏਲਿਧਾ ਸ਼ਾਰਪਤ ਖੀ ਠੈਅ । ਤਿਣੀ ਤੇਤਕੈ ਸੈ  
ਬਿਦੁਵਾ ਦੇਖੀ, ਸੈ ਖਾਣੈ ਚਾਣਨੇ ਖੀ ਲਾਕਡੇ ਰੈਇ  
ਥੀ ਕੌਠੀ ਕੌਰਦੀ ਲਾਗੀ ।



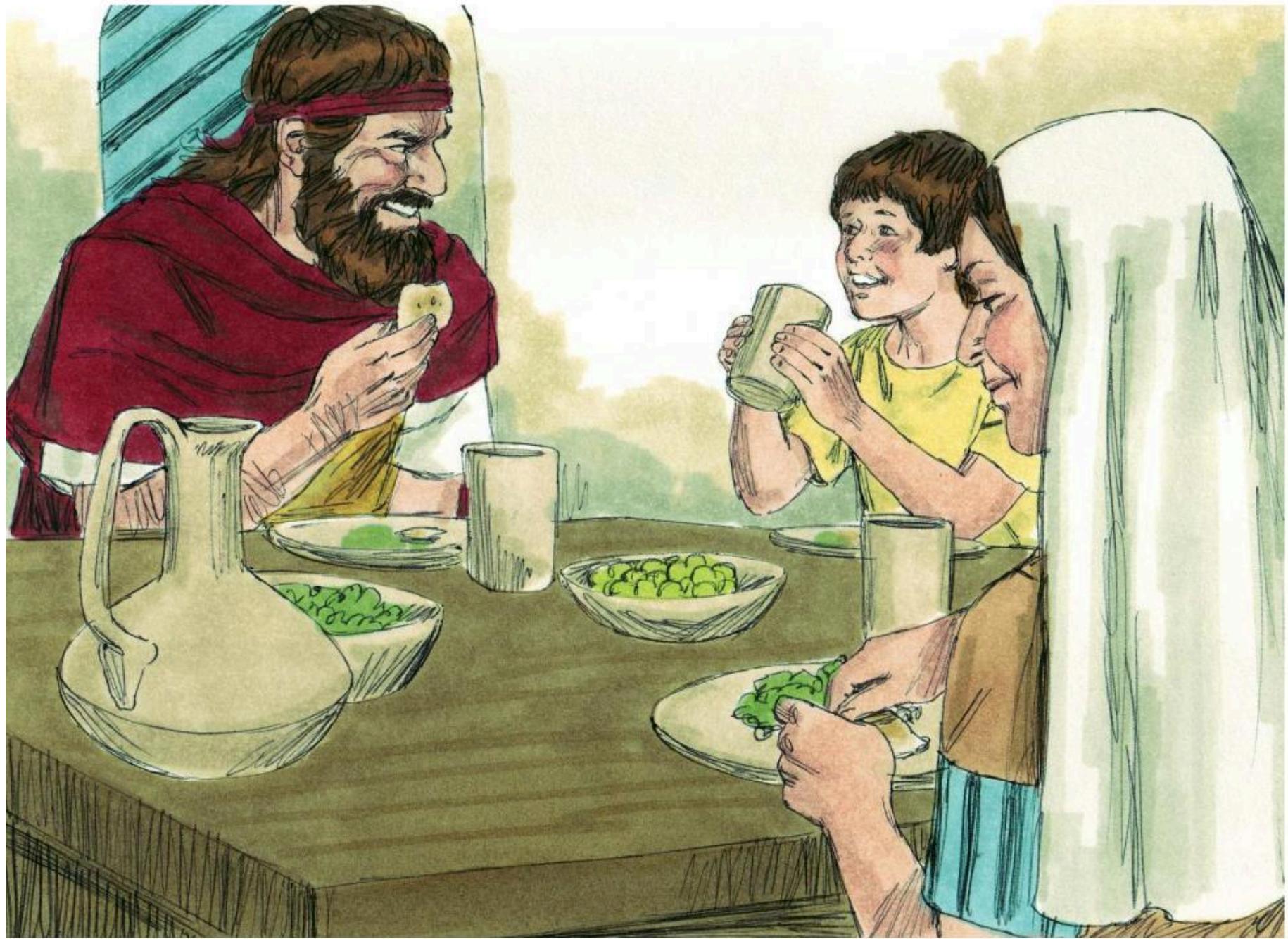
तैबै एलियाइ तिंयारी बोलौ, कि मुखी थोड़ौ ज़ाइं  
पाणी दै पिणे खी। तैबै सै छेऊड़ तेसखी पाणी  
आणिं डेइ, तैबै एलियाइ बोलौ, कि “मुखी एक  
टुकड़ी रोटी बी आणै।” पर तीं छेऊडिएइ बोलौ  
आऊं तेरै परमेश्वर री कसम खाइयौ बोलु कि  
मुकै रोटी ना नौथि।



तियै बोलौ मुकै एक मुठी पिदियान औज़ि  
बोतली पोरु थोड़ौ ज़ाइं तेल एसकौइ अलावा  
आम्कै कुछु बी ना नौथि, ज़ौ आऊँ गौरै डेऊली  
तै तेसकौइ आऊँ आपखी आखरी रौ खाणौ चाणु  
ली, औज़ि तेबासियै आऊँ औज़ि मेरौ बेटा दुईया  
ज़ोणै तेस खाई लै, तैबै कुछु बौकतै बासियै बूखै  
कौइ पोरु मौरी लै।



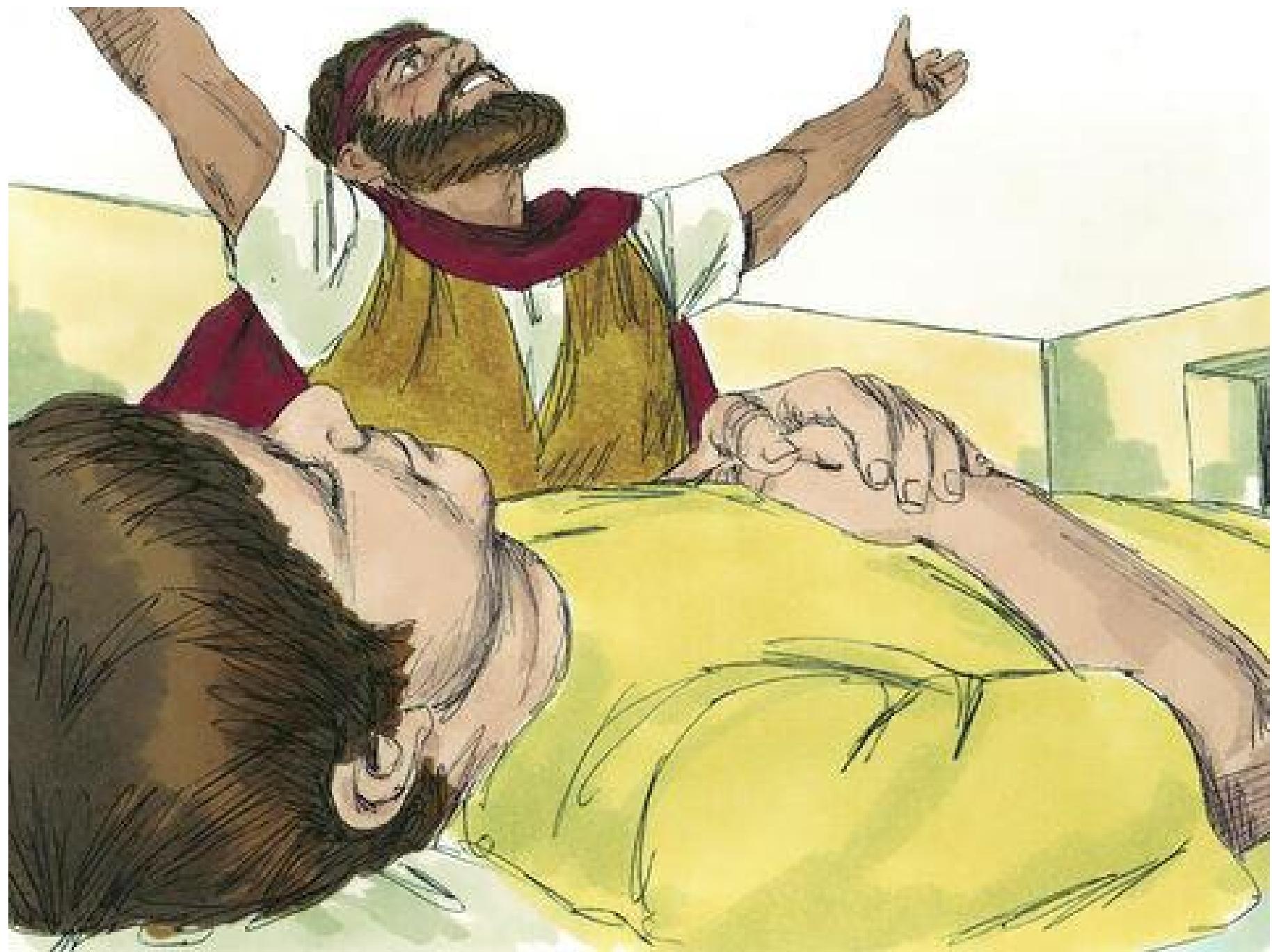
एलियाइ तिंयारी बोलौ, तू चिन्ता ना कौर एशौ ना  
उवै लौ, तू गौरे डेऊ, ताऊंके जेती पिदियान  
तेसकौइ औगौणिके मुख्वी रोटी चाणियौ आण,  
केलाकि परमेश्वरेइ मुआरी बोलौ, कि अकाल रै  
बौकते दि ना तै तेरौ एक मुठी पिदियान खतम  
उवै लौ ना तेल। तैबै तीं बिदुवाइ एलिया री  
बुशौऊं दि बिश्वाश कियौ।



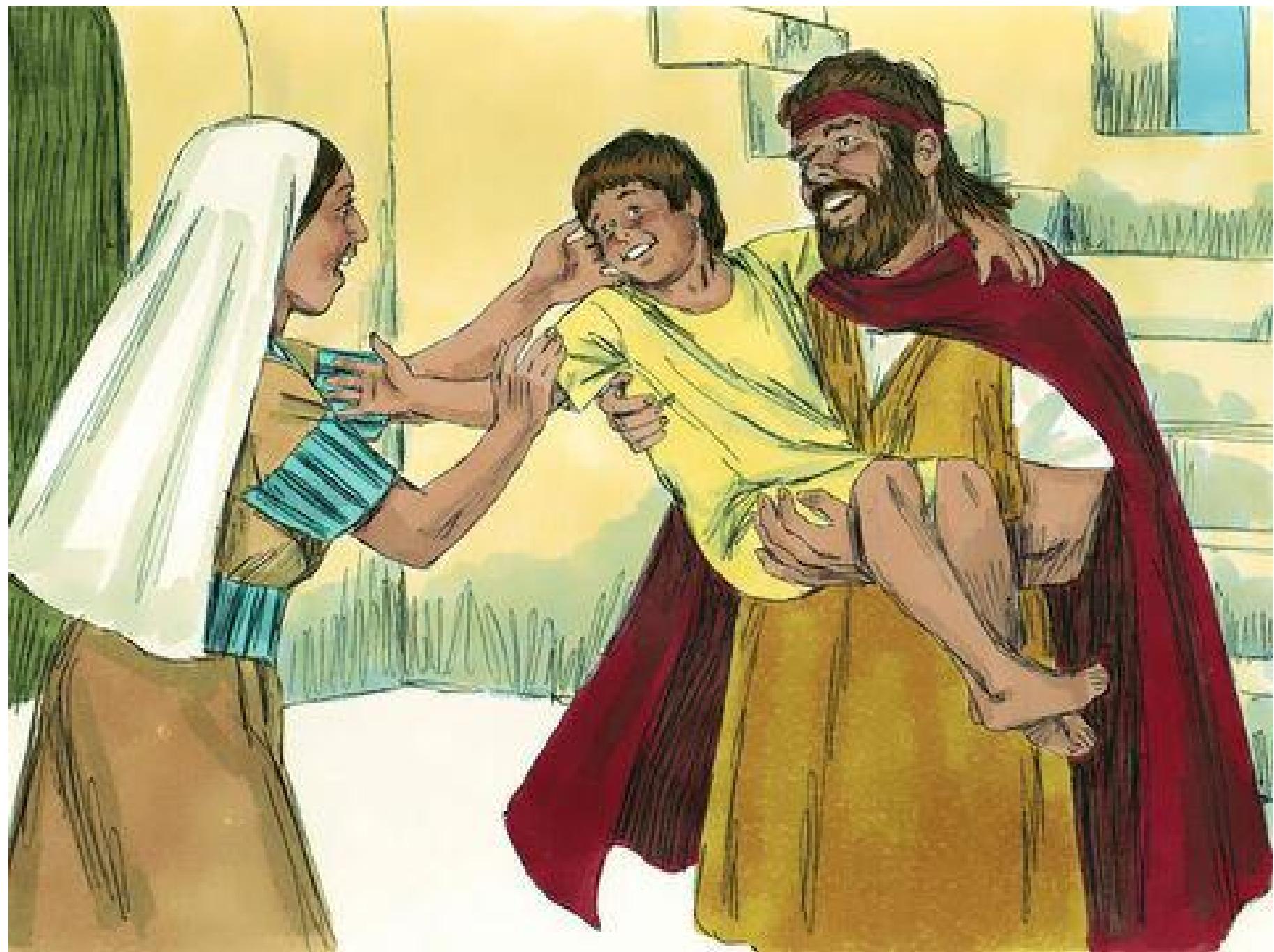
तैबै जेशौ एलियाइ बोलौ थौ तीं बिदुवाइ तेशौइ  
कियौ, औज़ि परमेश्वरेइ आपडे बचन री बौज़ै  
कौइ, जुण्ड़ौ तिणी एलिया आरी बोलौ थौ, ना तै  
तिंकै पिदियान खतम उवौ ना तेल। तेसी कौइ  
एलिया औज़ि तिंरौ परिबारेइ बौरी दुसु जौऊँ  
खाणौ खाओ।



ਕੁਛੁ ਬੈਕਤੈ ਬਾਸਿਯੈ ਤੀਂ ਛੇਊਡੀ ਰਾਂ ਬੇਟਾ ਕਾਸੀ  
ਬਿਮਾਰੀ ਰੀ ਬੈਜ਼ੈ ਕੌਇ ਪੋਲੁ ਮੌਰਾਂ । ਤੈਬੈ ਤੀਂ ਬਿਦੁਵਾ  
ਛੇਊਡਿਏਡ ਏਲਿਯਾ ਆਰੀ ਬੋਲਾਂ, “ਏ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਰਾਂ  
ਦਾਸ, ਕਾ ਤੂ ਆਮਾਰੈ ਪਾਪੂ ਆਮਕੈ ਯਾਦ ਦੇਅਾਨਦੈ  
ਆਅਨਦੈ ਤੇਰੀ ਬੈਜ਼ੈ ਕੌਇ ਮੌਰਾਂ ਮੇਰਾਂ ਬੇਟਾ ।”



तैबै एलियाइ सेउ मौरैन्दौ माऊँ टिपियौ माङ्लै  
छापरै माइं गिणौ जेत्कै सेउ आफू रौयै थौ, तिणी  
सेउ माऊँ दौनी पाओ लाम्बौ, तैबै एलियाइ  
परमेश्वर कौइ प्राथना की, तै परमेश्वरेइ  
सेउ ऊबै ज़ियाळौ, तैबै तीं छेऊडिएइ एलिया  
आरी बोलौ।



ऐਕੈ ਮੂ ਬਿਸ਼ਵਾਸ ਊਈ ਗੋਅ, ਕਿ ਤੂ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਰਾਏ  
ਦਾਸ, ਜੁਣਜ਼ਾਈ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਰਾਏ ਬਚਨ ਤੇਰੈ ਸੁਏ ਕੌਇ  
ਆਏ ਸੇਤ ਪੁਰਾਏ ਆਏ। ਤੈਕੈ ਅਕਾਲ ਰੀ ਚੀਜ਼ੀ  
ਸਾਲ ਦੀ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰੇਝ ਏਲਿਯਾ ਆਰੀ ਬੋਲਾਈ, ਤੂ  
ਅਹਾਕ ਰਾਜਾ ਕਾਈ ਡੇਊ, ਤੈਕੈ ਏਲਿਯਾ ਅਹਾਕ ਰਾਜਾ  
ਕਾਈ ਡੈਅ।

## For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.



यह किताब NLCI संस्थान के द्वारा तैयार की गई है।

हम मातृभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मातृभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मातृभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मातृभाषा में व्यस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मातृभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मातृभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

,,,,,,,,,,धन्यवाद,,,,,,,,,,



This book was created with some Bloom Enterprise features enabled at no cost in order to support projects solely funded by the local community.